

तन्त्र ग्रन्थमाला नं० १७

ब्रह्मानन्दगिरिविरचित

# शाक्तानन्दतरङ्गिणी

( मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित )

सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक

राम कुमार राय



प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी

# विषय सूची

भूमिका

४

प्रथम उल्लास : शरीर निर्णय

१-२५

मंगलाचरण १, प्रकृति शब्द का अर्थ १, नित्या शब्द का अर्थ २, परमात्म शब्द का अर्थ २, शरीर उत्पत्ति का क्रम ४, शरीरस्थ-नाड़ी निर्णय ८, भूतगुण ९, शरीरस्थ वायु निर्णय ९, शरीर कोष वर्णन १०, शरीर में सप्त पाताल वर्णन १०, शरीरस्था भूरादिलोक कथन ११, शरीरस्थ सप्तपर्वतों का वर्णन ११, शरीरस्थ सप्तद्वीप वर्णन ११, शरीरस्थ सप्तसागर वर्णन १२, शरीरस्थ ग्रहमण्डल १२, गर्भस्थजीव का पूर्वजन्मस्मरण १३, स्त्रीपुरुषादि भेद कारण १४, जीवावस्था कथन १५, जीवों का कर्म फलप्रकार १५, मनुष्यजन्मोत्कर्ष कथन १७, मोह का प्रभाव १७, मोह का संसारकारणत्व कथन १८, मोक्ष का कारण १९, संसार का दुःखरूपत्व वर्णन २०, महामाया शब्द का अर्थ २२, महामाया के भेद २३, विद्या की प्रशंसा २४।

द्वितीय उल्लास : दीक्षा निर्णय

२६-६२

दीक्षा माहात्म्य २६, आगम लक्षण २७, दीक्षा शब्दार्थ ३०, अदीक्षितार्चन निन्दा ३१, मन्त्र ग्रहण नियम ३१, गुरु शब्दार्थ ३१, गुरुलक्षण ३२, ब्राह्मण गुरुकरण विधि ३२, दीक्षा के फल ३३, शूद्र-दीक्षाधिकार विचार ३३, स्त्रीगुरु दीक्षा ग्रहणफल ३६, मन्त्रोद्धार ३७, मन्त्र लेखन नियम ३७, अर्घद्रव्य ३८, अर्घदान मन्त्र ३९, शक्ति की दीक्षा ३९, उपदेश दीक्षा ४२, काल विशेष में मन्त्र विशेष ग्रहण के नियम ४४, मन्त्रों के दस संस्कार ४५, इष्टदेव का नित्यपूजा तत्त्व कथन ४८, सूतकिन पूजाविधि ४९, गुरु का माहात्म्य ५०।

तृतीय उल्लास : भेद योग निर्णय

६३-७९

योग निर्णय ६३, विग्रहसृष्टि का कारण ६३, आराधना लक्षण ६६, द्विविध ध्यान कथन ६७, योग निरूपण ६९, ध्यानयोग प्रशंसा ७१, स्त्रीरूपावतार लक्षण ७२, पुरुषावतार लक्षण ७३,



ईश्वरनिन्दा फल ७४, शक्ति उपासना प्रशंसा ७५ ।

चतुर्थ उल्लास : प्रातः कृत्यनिर्णय

७७-११३

प्रातः कृत्यविधि ७७, श्रीगुरु का ध्यान ७७, गुरु मानस पूजा ७८, गुरु मन्त्र ७८, गुरु स्तुति ७९, श्रीगुरु का प्रणाम मन्त्र ८१, षट्चक्र निरूपण ८१, मूलाधारचक्र कथन ८२, स्वाधिष्ठान-मणि-पुरचक्र विवरण ८४, अनाहत-पद्म विवरण ८४, विशुद्धचक्र निरूपण ८४, आज्ञाचक्र विवरण ८५, सहस्रार-चक्र विवरण ८५, कुण्डलिनी योग ८६, गृहस्थ-योग साधन ८३, प्रकारान्तर कुण्डलिनी योग ८४, कुण्डलिनी-प्रत्यावर्त्तन प्रकार ८८, दन्तधावन विधि १०१, स्नान विधि १०२, स्नान मन्त्र १०२, तीर्थ आवाहना मन्त्र १०३, आचमन मन्त्र १०४, शाक्ततिलक विधि १०५, तान्त्रिक-सन्ध्या १०७, तर्पण विधि १०८, सूर्यार्घ्य दान १०९, कुण्डलिनी ध्यान ११०, गायत्री जप विधि १११ ।

पंचम उल्लास : आसन निर्णय

११४-१२०

आसन निर्णय ११४, पद्मासनादि लक्षण ११७, नित्यनैमित्तिक पूजा कथन ११८ ।

षष्ठ उल्लास : अन्तर्यागि विधि

१२१-१३०

अन्तर्यागि विधि १२१ ।

सप्तम उल्लास : नित्यपूजा प्रणाम-निर्णय

१३१-१४४

गुरुतन्त्रोक्त-पूजाविधि १३१, द्रव्यासादन १३३, अथ शान्ति कुण्ड प्रमाण १३४, अर्घ्यस्थापनक्रम १३५, भूत शुद्धि १४१, मातृका षडङ्गन्यास १४४, अन्तर्मातृका न्यास १४४, अथ विद्या न्यास १४६, अङ्गन्यास १५०, षोडशन्यास फल १५२, आत्म ध्यान १५२, देवी ध्यान १५३, देवी का आवाहन १५४, द्रव्यदान नियम १५५, षडङ्गादि आवरण पूजा १५५, पूर्वादिदिशाओं का निरूपण १५८, मन्त्र जप प्रकार १६०, आत्म समर्पण १६१ ।

अष्टम उल्लास : माला निर्णय

१६५-१७७

माला निर्णय १६५, करमाला जप प्रकार १६६, माला विधान १७०, माला प्रतिष्ठा विधि १७२, माला में जप विधि १७४, वर्ण माला १७६ ।

**नवम उल्लास : जप लक्षण निर्णय १७८-२०१**

जप विधि १७८, मानसादि जप भेद १७८, मन्त्र जप पद्धति १७९, मन्त्र पुरश्चरण विधि १८२, काली मन्त्रों का तनुक्रम १८३, कामिनी तत्त्व १८५, कामिनी ध्यान १८८, नवतत्त्व निरूपण १९१, मन्त्रार्थ निरूपण १९३, मन्त्र स्थान १९३, मन्त्र चैतन्यादि निरूपण १९४, योनिमुद्रा १९५, मन्त्रशिखा निरूपण १९८, अशौच भङ्ग १९९, स्त्रीशूद्रों का अशौच भङ्ग २००, गणना विधि २०१।

**दशम उल्लास : सेतु महासेतु कुल्लुका निर्णय २०२-२१४**

महासेतु निरूपण २०२, महासेतु २०२, सेतु निरूपण २०३, सामान्य सेतु २०४, विशेष सेतु २०४, अथ कवच सेतु २०८, कुल्लुका प्रयोजन २०९, कुल्लुका निरूपण २१०।

**एकादश उल्लास : मुख शोधन निर्णय २१५-२३३**

मुखशोधन २१५, निद्राभङ्ग २२०, निद्राभङ्ग मन्त्र २२१, मन्त्रविद्या लक्षण २२२, दीपनी लक्षण २२२, योनि मन्त्र २२३।

**द्वादश उल्लास : पुरश्चरण निर्णय २२४-२५२**

पुरश्चरण लक्षण २२४, पुरश्चरण प्रयोजन २२४, पुरश्चरण के पूर्वदिन का कृत्य २२५, दीपस्थान २२६, पुरश्चरण दिन का कृत्य २२८, पुरश्चरण संकल्प २३१, भक्ष्यादि नियम २३३, हविष्यान्न लक्षण २३४, होमादि नियम २३६, तर्पण विधि २३६, तर्पण द्रव्य २३७, अङ्गहीन में जपविधि २३९, वीरकल्प २४२, ग्रहण पुरश्चरण २४५, भोजन काल २४७, जप प्राधान्य २४९, कवच पुरश्चरण २५२,।

**त्रयोदश उल्लास : यन्त्र प्रतिष्ठादि निर्णय २५३-२६८**

यन्त्र संस्कार २५३, यन्त्र संस्कार संकल्प २५४, यन्त्र स्नान २५५, पञ्चगव्य परिमाण २५६, बलिदान २६२, रुधिर मस्तक स्थापन क्रम २६५, बलिमस्तक पतन फल २६५, बलिमस्तक में दीपदान २६६, अवैध हिंसा में दोष २६६।

**चतुर्दश उल्लास : उपचारादि निर्णय २६९-२९२**

उपचार विधि २६९, पाद्या निरूपण २७०, मधुपर्क निरूपण



२७१, गन्ध कथन २७२, पुष्प प्रकरण २७२, पुष्पों का पर्युषित काल २७५, पुष्पों का चयन २८०, धूप प्रकरण २८१, दीप प्रकरण २८२, नैवेद्य प्रकरण २८३, प्रदक्षिण विधि २८४, प्रणामविधि २८५, उपचार प्रकरण २८७, नैवेद्य आदि को ढकने की अवश्यकता २८८, नैवेद्य दान विधि २८९, प्राणादि मुद्रा २९०, द्रव्यों के निर्माल्यता का काल नियम २९१ ।

### पञ्चदश उल्लास : जपादि फल निर्णय २९३-३०९

अथ शाक्ताचार २९३, कुलवृक्ष २९४, पीठ निरूपण २९५, पीठस्थान में जपफल २९६, नित्यसंकेत स्तव ३०१, शिवा बलि ३०३, शिवा बलि की नित्यता ३०४, शिवा बलि दान मन्त्र ३०४, शिवा-पूजा का फल ३०५, देवी को प्रणाम का फल ३०७ ।

### षोडश उल्लास : संसर्ग दोषादि निर्णय ३१०-३२८

जपादिफलाभाव निर्णय ३१०, संसर्ग दोष ३१०, प्रायश्चित्त ३१४, धृतकवच नाश प्रायश्चित्त ३१५, प्रतिष्ठा क्रम ३१६, यत्न-नाश का प्रायश्चित्त ३१६, पूजाकाल के यन्त्रादिपतन का प्रायश्चित्त ३१७, माला विनाश प्रायश्चित्त ३१८, गुरुक्रोध के उपशमन का प्रायश्चित्त ३२०, अनिवेदित भोजन प्रायश्चित्त, ३२० ।

### सप्तदश उल्लास : कुण्ड निर्णय ३२९-३३८

कुण्डविधि ३२९, मण्डप निर्माण ३२९, मानांगुलि लक्षण ३३०, मण्डपस्थान परिमाण ३३०, दिक्पालवर्ण ३३१, कुण्डशरीर ३३१, चतुरस्र कुण्डलक्षण ३३२, खात परिमाण ( कुण्ड को गहराई परिमाण ) ३३२, मेखला निरूपण ३३४, नाल निरूपण ३३६, कुण्डदोष ३३७, स्थण्डिल लक्षण ३३७ ।

### अष्टादश उल्लास : होमादि निर्णय ३३९-३५९

होमविधि ३३९, अष्टादश कुण्ड संस्कार ३३९, प्रकारान्तर संस्कार ३४०, पञ्चशुद्धि ३४१, अग्निप्रणयन ३४२, जिह्ममन्त्र ३४४, जिह्वाधिपति देवता ३४५, मूर्तिन्यास ३४६, वह्नि प्रज्वालन मन्त्र ३४७, परिधि लक्षण ३४८, वह्निध्यान ३४८, होमविधि ३५१, अग्निमुख निरूपण ३५६, श्रोत्रादि का हवन फल ३५६, सर्वमङ्गलादिनाम ३५७ ।